गुजरात में रचनात्मक प्रवृत्ति और आर्थिक राष्ट्रवाद

शालू महेश कुमार पाराशर
रिसर्च स्कॉलर,
गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद

रचनात्मक प्रवृत्ति क्या है? और आर्थिक राष्ट्रवाद अर्थात्? सबसे प्रथम हम उपरोक्त दोनों प्रश्नो का जवाब जान लेते है। समाज के नवनिर्माण उत्थान और विकास के लिए– राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजकीय विकास के लिए– सामाजिक व्यवस्था के लिए जो प्रवृत्ति कि जाती है वह रचनात्मक प्रवृत्ति और आर्थिक राष्ट्रवाद एक विचारधारा है जो अर्थव्यवस्था में राज्य के हस्तक्षेप को प्राथमिकता देती है, जिसमें घरेलू नियंत्रण जैसी नीतियां और कर का उपयोग और श्रम, माल और पूंजी आंदोलन पर प्रतिबंध शामिल हैं।(गिलपिन, रॉबर्ट(1987)अंतराष्ट्रीय संबंधो की राजनीतिक अर्थव्यवस्था प्रिंसटन यूनिवर्सिटी)

प्रस्तुत लेख के विषय का शीर्षक हैः ''गुजरात में रचनात्मक प्रवृत्ति और आर्थिक राष्ट्रवाद'' इस विषय को हम ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में अर्थात् की भारत की आजादी के पहले के समय को समझने का प्रयास करते है।

20वीं सदी के प्रारम्भ में लोर्ड कर्जन के जुल्मी कर योग्य भारत की योद्धा शक्ति को जागृत करी.....प्रजा के जहाल नेताओ ने देखा कि लड़खड़ाती ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ लंबे समय तक पैरवी उपयोगी नहीं होगी.....कांग्रेस ही एक ऐसी संस्था थी की जिसके द्वारा हिन्दी प्रजा को स्वराज की तरफ कुच करनी है, इस संस्था की मर्यादा होते हुए भी इसका जन्म स्वराज्य के लिए ही हुआ है ऐसा दादाभाई की सचोट राय थी।

फुट डालो और राज करो की नीति के भाग स्वरूप ब्रिटिश सरकार ने बंगाल का विभाजन किया। सरकार ने प्रशासनिक सुविधा के बहाने 1905 में निर्णय लिया था। इस घटना के कारण देशभर में उग्रप्रत्याघात पड़े। बंगाल के लोगो का भावनाशील होने के कारण उनकी भावना तीव्र होने से उन्होंने स्वदेशी आंदोलन शुरू किया जगह जगह सभाओं, रैली, लेखों और परिषदो द्वारा विरोध व्यक्त किया गया। विरोध और प्रतिकार करने की भारत में से चार प्रकार की क्रांति शुरू हुई। (1) बहिष्कार, (2) स्वदेशी (3) स्वावलंबन और (4) निःशस्त्र प्रतिकार बहिष्कार में मुख्य रूप से अंग्रेजी कपड़े, नमक, शक्कर, अंग्रेजी भाषा, इसके अलावा जो परदेशी माल खरीदे उसका सामाजिक बहिष्कार।

विदेशी माल का बहिष्कार तो होता ही है पर दैनिक उपयोग की वस्तुएँ तो चाहिए ही। पर सवाल यह था कि ये वस्तुएं लाए कहा से ? इस सहज प्रश्न में से ही प्रजा के स्वावलंबन

और स्वदेशी की भावना और कार्यो का जन्म हुआ। स्वदेशी के बिना के उद्धार नहीं इसका ज्ञान प्रजा को उस वक्त हो गया था। इस समय में स्वदेशी उद्योगों को अच्छा बढ़ावा मिला। स्वदेशी प्रवृत्ति की कद्र तो विनित पक्ष के नेताओं ने भी अच्छे रूप से की थी। निःशस्त्र प्रतिकार का काम आयरलेण्ड की प्रजा ने कर के बताया। अरविंद घोष आदि ने बंगाल में निःशस्त्र प्रतिकार का उद्‌बोधन किया था। इसके पिछे आध्यात्मिक आधार अपनाने का पुरा प्रयास किया गया।

इस समय के दौरान मोहनदास करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रिका में अहिंसात्मक सत्याग्रह की नयी पद्धति से ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलन खड़ा करके हिन्दीवासिओं को न्याय दिलाया। संघर्ष में अपनाई गई एक बड़ी ऐतिहासिक घटना थी। लोर्ड कर्जन के जिद्दी रवैये के कारण बंगाल और अन्य प्रदेशो में सरकार विरोधी आंदोलन को प्रोत्साहन मिला।

अहमदाबाद में बढ़ते जाते कपड़ा और अन्य उद्योगो को सहारा देने के लिए 1876में 'स्वदेशी उद्योग वर्धक मंडल' की स्थापना हो चुकी थी। 1906 में अहमदाबाद के रीचीरोड़(गांधीरोड़) पर एक मकान में स्वदेशी आंदोलन से संबंधित विद्यार्थीओं की सभा मिली थी जिसमें वंदेमातरम का गुजराती रूपांतरण गाया गया। इन दिनों में विरमगाम में देकावाडा गॉव और मांडल गॉव में भी सभाएँ आयोजित की गई। जिसमें स्वदेशी शक्कर के इस्तेमाल करने का निर्णय किया गया। इसके उपरांत अहमदाबाद में 1903 में 'स्वदेशी वस्तु संरक्षण मंडल' की शुरूआत हुई थी। इसे बंग भंग आंदोलन से अच्छा प्रवाह मिला।

राजाराम मोहनराय, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, बंकीमचंद्र, गोपालकृष्ण गोखले, दादाभाई नवरोजी, लोकमान्य तिलक, महादेव गोविंद रानाडे, लाला लाजपजराय, अरविंद घोष, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महर्षि कर्वे, नर्मदाशंकर, दलपतराम और एनी बेसेंट आदि अनेक विचारशील व्यक्ति इनकी स्वदेशी, राष्ट्रवाद, स्वराज्य, शिक्षण आदि विषय पर पुरा अभ्यास और चिंतन करके राष्ट्र के सामाजिक, राजकीय और सांस्कृतिक प्रेक्ष में सक्रिय भुमिका निभाई थी। उन्होने अंधविश्वास से ग्रस्त समाज को उसकी नींद से बाहर निकालने की कोशिश की है।

गांधीजी 21 साल बाद दक्षिण अफ्रिका से 1915 में भारत लोटे और आते ही आजादी की जंग में शामिल हो गये। गांधीजी की नजर अहमदाबाद पर थी क्योकी '' एक गुजराती होने के नाते, मुझे विश्वास था की में गुजराती भाषा के माध्यम से देश की अधिक सेवा कर सकता हुँ। एक धारणा यह भी थी कि चुंकि अहमदाबाद हथकरघा केन्द्र है, इसलिए रेटिया का काम भी यहां बेहतर तरीके से हो सकता है। गुजरात की राजधानी होने के कारण यह भी उम्मीद थी की धनाढ्य लोग धन की मदद करेंगे। सत्याग्रह आश्रम की स्थापना 25 मई, 1915 को कोचरब, अहमदाबाद में एक नये घर में की गई थी और गांधीजी ने राष्ट्रीय सेवा की गतिविधियों की शुरूआत की थी।''

उस समय राष्ट्रीय गतिविधि शहरों तक सिमित थी। गांधीजी के हिंद आगमन के बाद स्थिति बदली। गांधीजी के गुजरात सभा के अध्यक्ष बनने के बाद गुजरात सभा ने बहुत काम किया, बिहार के गली के खेतों में काम करने बाले मजदुरों, अहमदाबाद मिल मजदुरों और किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष के माध्यम से राष्ट्रीय गतिविधि गांवो तक पहुंचाई। हिंदी वजीर

मोंटेग्यु चेम्सफोर्ड को बंधारणीय सुधार के लिए ज्ञापन देना था इसे गांधीजी ने तैयार किया था। इस याचिका पर कार्यकत्ताओं द्वारा गांव–गांव जाकर हजारों हस्ताक्षर किये गये, जिससे दूर–दराज के गांवों में भी लोगों के मन में स्वशासन का विचार घर कर गया था। गांधीजी ने स्वराज्य और समाज कल्याण के लिये जो सिद्धांत बनाये उसे भी लागु किया। लोगों से सरल भाष में संवाद किये जिसे लोग समझ सकें। मशीनों के युग में बड़े शहरों में कारखाने और कपड़ा मिले शुरू हो गई थी, ग्रामोद्योग नष्ट हो गये थे। प्रतिदिन नगरों में जाओं और बसे हुए गॉवों को नष्ट कर दो। गांधीजी को लगता था कि आजादी की पहली शर्त गांवों की अर्थव्यवस्था को सुधारना है, गांवों को आबाद किये जाये तो ही समाज जीवित रह सकता है। इसके लिए गांधीजी ने स्वतंत्रता के लिए राजनीतिक जन आंदोलन के साथ–साथ आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया।

आर्थिक राष्ट्रवाद और एक स्वस्थ समाज के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए देश के सामने रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। गांधीजी के पुस्तक निर्माण कार्यक्रम में लगभग 15 कार्यक्रमों का उल्लेख देखने को मिलता है। 1. संप्रदायिक एकता 2. अछुतो का उद्धार 3. मद्य निषेध 4. खादी 5. ग्रामीण व कुटीर उद्योग 6. गॉव की सफाई 7. नई तालीम 8. प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता 9. महिला सशक्तिकरण 10. संपूर्ण–गॉव सेवा 11. हिन्दुस्तानी का प्रचार 12. मातृभाषा के लिए प्रेम 13. आर्थिक समानता के लिए कार्य 14. आदिवासिओं की सेवा 15. विद्यार्थी किसान और मजदुरों का संगठन। खादी स्वराज्य और आर्थिक सुधार की दिशा में एक महत्वपुर्ण कदम है।

एक दिन आश्रम में एक सभा हुई जब दिनबंधु एंड्रयूज और पियर्सन पहुंचे तब गांधीजी ने एक छोटा सा रूमाल हाथ में लिया और उसकी अतुलनीय स्तुति की। खादी के इतने छोटे टुकड़े की इतनी तारीफ सुनकर हर कोई हैरान रह गया।

दादासाहेब मावलंकर ने 1940 में एक व्याख्यान में खादी के महत्व को विस्तार से बताया है। अगर हम खादी नही अपनाएंगे तो हमें स्वराज्य नहीं मिलेगा, हमें खादी के दर्शन और विचार को समजना चाहिए, स्वराज्य क्या है और यह अच्छा क्यों है? अगर हम यह समझले कि खादी स्वराज का दुसरा चरण है..... जिस तरह की राजनीति में हम जो संपत्ति पैदा कर सकते है वह सभी लोगो के लिए उपलब्ध हो सकती है, स्वराज्य का सही अर्थ है। यदि भुख स्थायी है तो यह स्वराज्य नहीं है।

40 करोड़ लोगो में से अधिकांश गांवो में रहते है। हम उन्हैं कोनसा उद्योग देंगे? कृषि उद्योग है, इसके अलावा और कोनसा उद्योग है जो हमारी आय बढ़ा सके..... क्या खादी के अलावा और कोई उद्योग है जो खाने–पीने का काम दे सके और कम पूंजी से घर पर ही किया जा सके ? यदि आप मिल चलाते है तो आप कितने लोगों को खिला सकते है? एक मिल रूपये निकाल रही है। 25 लाख चाहिए, 2000 रोज मिलते हैं। 10 हजार का पोषण होगा तो आप इतनी पुंजी कहा से लायेंगे कि 40 करोड़ की मिल मिल जायें? कहां बेचोगे माल? गांव–गांव मिले ले जाओगें। उस समय कहा जाता था कि 'सूत्रेन तन्तेन स्वराज्य',

गांधीजी के पंचसूत्र रचनात्मक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूरे भारत और विशेषकर गुजरात भर में रचनात्मक संगठन शुरू किये गए। ये गतिविधियों के कारण शहरों और आदिवासी क्षेत्रों के श्रमिक वर्ग शराब की लत से पीड़ित होने लगे।

सत्य,अहिंसा, स्वशासन की प्राप्ति के लिए सक्रिय प्रयास तो सही हैं, लेकिन गांधीजी की दृष्टि से रचनात्मक कार्य भी बहुत महत्वपुर्ण थे। एक उत्कृष्ट उदाहरण है गुरूवार 9 अगस्त 1929 को महात्माजी और वल्लभभाई (बारडोली) ने घोषणा की कि संघर्ष समाप्त हो गया है और लोगों से रचनात्मक कार्यों में संलग्न होने की अपील की।

आर्थिक समानता, ग्रामीण कुटीर उद्योग और खादी के लिए किये गये कार्यो ने आर्थिक राष्ट्रवाद की गतिविधि को जन्म दिया। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के माध्यम से घरेलू वस्तुओं की बचत में वृद्धि ने राष्ट्र की संपत्ति को बढ़ाने के लिए प्रेरणा दी। मातृभाषा के प्रति प्रेम और हिंदुस्तान के प्रचार द्वारा देश की भावनात्मक एकता प्राप्त करना। आदिवासियों की सेवा और हरिजन गतिविधियों के माध्यम से समाज में व्याप्त सामाजिक भेदभाव को दूर करने के प्रयास किया। साम्प्रदायिक एकता के माध्यम से साम्प्रदायिक वैमनस्य को दूर करने के प्रयास, रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से सर्वत्र फैलाई गई जागरूकता आदि ने स्वतंत्रता प्राप्ति के राजनीतिक प्रयासों के संधर्ष को गति दी।

इस प्रकार, गुजरात में गांधीजी की रचनात्मक गतिविधि ने आर्थिक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया।

संदर्भ सूची

1. देसाई शांतिलाल एम., (1975) राष्ट्र का स्वतंत्रता संग्राम और गुजरात, विश्वविद्यालय ग्रंथ सुची बोर्ड, अहमदाबाद, पृ. 53
2. ऐजन, पृ. 65–66
3. ऐजन, पृ. 67
4. ऐजन, पृ. 67
5. गॉधी मोहनदास करमचंद, (2004) सत्य के प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मंदीर, अहमदाबाद, पृ. 355
6. मरियाकर, गणेश वासुदेव (2011) संभरण, अबुनोंध पुरूषोत्तम मावलकर, डॉ. पी. जी. मावलंकर फाउंडेशन ट्रस्ट, अहमदाबाद, पृ. 11
7. चतुर्वेदी सतीश(2004), स्वदेशी और गांधीवादी विचार, पॉइंटर पब्लिशर्स, जयपुर, पृ. 105
8. मावलंकर गणेश वासुदेव, उपरोक्त पृ. 16,17,18
9. मेहता सुमंत,(1928) बारडोली और रचनात्मक कार्य, प्रस्थान, पृ. 2–7
10. बारडोली विजयांक– प्रताप ''तवारिख मा तवारिख'' पत्रिका में दिनांक, स्थान नहिं है। पृ. 28